

डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, धर्मशास्त्र, सत्र 9, त्रिएकत्व का सिद्धांत

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन और ईश्वर के बारे में उनकी शिक्षा है। यह सत्र 9 है, त्रिदेवों का समापन।

इस व्याख्यान में हमारा लक्ष्य त्रिएकत्व के सिद्धांत को पूर्ण करना है। लेकिन ऐसा करने से पहले, आइए हम प्रार्थना में परमेश्वर की खोज करें। दयालु पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा, हम स्वीकार करते हैं कि केवल आप ही परमेश्वर हैं।

हम आपकी रचना के रूप में और मसीह में आपके छुड़ाए हुए प्राणियों के रूप में अपनी पहचान में आनन्दित हैं। हम प्रार्थना करते हैं कि हमें आशीर्वाद दें। हमें अपनी सच्चाई में ले चलें।

हम प्रार्थना करते हैं कि हमारे हृदय को प्रोत्साहन मिले, हम अपने प्रभु यीशु मसीह के माध्यम से प्रार्थना करते हैं। आमीन। कुछ समय पहले, हमने कहा था कि त्रिएकत्व के सिद्धांत में हम सात बिंदु रखना चाहते थे।

हमने पुराने नियम में बाइबल की बात इस तथ्य से शुरू की कि एक ही ईश्वर है। नया नियम कभी भी इसे कम नहीं करता, बल्कि इसे और पुष्ट करता है, जैसा कि हमने याकूब 2 और 1 तीमुथियुस 2:5 में देखा। फिर हमने कहा कि पिता ईश्वर है और इसे प्रदर्शित किया। पुत्र ईश्वर है, जो मसीह के ईश्वरत्व के प्रमाण देता है।

पवित्र आत्मा ईश्वर है। अब, हम इस सिद्धांत को तीन अन्य सिद्धांतों के साथ पूरा करते हैं। तीन दिव्य व्यक्ति अविभाज्य हैं क्योंकि ईश्वर एक त्रि-एकता है।

लेकिन वे अलग-अलग हैं। यानी हम कभी भी व्यक्तियों को अलग नहीं करते, लेकिन हम व्यक्तियों को भ्रमित भी नहीं करते। हम उनकी अलग-अलग पहचान को स्वीकार करते हैं।

नंबर दो, आश्चर्यजनक रूप से, बाइबल कहती है कि ईश्वरीय व्यक्ति एक दूसरे में निवास करते हैं। वे एक दूसरे में हैं। और इसके बहुत बड़े निहितार्थ हैं।

वास्तव में, व्यक्तियों के सह-समान देवता के सिद्धांत के बीज यहीं हैं। यह आश्चर्यजनक है कि वे एक दूसरे में निवास करते हैं। और अंत में, शास्त्र सिखाता है कि वे एकता और समानता में मौजूद हैं।

एक बार फिर, हमें हाथ पकड़कर तीन व्यक्तियों में एक ईश्वर के रूप में अनंत काल तक विद्यमान रहने वाले ईश्वर की ओर इंगित करते हैं। पिता, पुत्र और आत्मा अविभाज्य हैं लेकिन अलग-अलग हैं। एक जीवित ईश्वर अनंत काल तक तीन तरीकों, तीन व्यक्तियों, तीन तरीकों से विद्यमान रहता है।

पिता, पुत्र और आत्मा। इसके अलावा, चूँकि केवल एक ही ईश्वर है, इसलिए ये तीनों अविभाज्य हैं। दो ईश्वर या तीन ईश्वर नहीं हैं।

ईश्वर एक है। तीनों व्यक्ति अविभाज्य हैं। हम देखते हैं कि तीनों व्यक्ति सृष्टि में भाग लेते हैं।

तीनों व्यक्ति छुटकारे में भी भाग लेते हैं। तीनों व्यक्ति सृष्टि में भाग लेते हैं। पिता, उत्पत्ति 1:1, आरंभ में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की रचना की।

पुत्र, नया नियम कई स्थानों पर सिखाता है कि पुत्र सृष्टि में पिता का प्रतिनिधि था। यूहन्ना 1-3, सभी चीजें उसके द्वारा बनाई गई थीं और उसके अलावा कोई भी चीज नहीं बनाई गई थी जो बनाई गई है। यह व्यापक भाषा है।

यह व्यापक भाषा है। उसके अलावा एक भी ऐसी चीज़ नहीं बनाई गई जो बनाई गई हो। दूसरे शब्दों में, उसने सभी चीज़ों को बनाया जो सकारात्मक रूप से कहता है और फिर नकारात्मक को नकारता है।

कोई भी चीज़ ऐसी नहीं बनी जो उसके द्वारा न बनी हो। कुलुस्सियों 1 में भी यही बात अलग-अलग शब्दों में कही गई है। कुलुस्सियों 1:15, वह पुत्र अदृश्य परमेश्वर की छवि है, सारी सृष्टि में ज्येष्ठ है, और सारी सृष्टि में सर्वोच्च है।

भजन संहिता 89:27, मैं उसे अपना जेठा बनाऊँगा, दाऊद का महान वंशज, मसीहाई राजा। मैं उसे अपना जेठा बनाऊँगा, पृथ्वी के राजाओं में सबसे महान। वह सारी सृष्टि का जेठा है क्योंकि उसके द्वारा सभी चीज़ें बनाई गई थीं।

अब, यूहन्ना की भाषा से अलग, एक बार फिर, सृष्टि की व्यापकता स्पष्ट है। सभी चीज़ें स्वर्ग और पृथ्वी पर बनाई गई थीं, जो उत्पत्ति 1:1 का एक संकेत है। बस यही सब है।

शुरुआत में, भगवान ने आकाश और धरती बनाई। दृश्यमान और अदृश्य चीज़ें, क्या आप तीसरी श्रेणी का सुझाव देंगे? नहीं, बस यही है। वे चीज़ें जिन्हें आप देख सकते हैं, धरती और आकाश और जानवर और पौधे, और वे चीज़ें जिन्हें आप नहीं देख सकते, फ़रिश्ते और खुद भगवान।

इसके अलावा, यह बताता है कि अदृश्य चीज़ें क्या हैं, चाहे सिंहासन हों या प्रभुत्व, शासक हों या अधिकारी। यानी, यह स्वर्गदूतों के बीच कुछ प्रकार के भेद हैं, शायद पद, हमें यकीन नहीं है। पौलुस में उन शब्दों का इस्तेमाल स्वर्गदूतों के लिए किया गया है, कभी-कभी विद्रोही लोगों के लिए, लेकिन हमेशा, हमेशा नहीं, बल्कि हमेशा स्वर्गदूतों का एक संयोजन।

इसका इस्तेमाल सांसारिक शासकों के लिए किया जा सकता है, उदाहरण के लिए, इनमें से किसी एक शब्द के लिए। लेकिन संयोजन, विशेष रूप से इस संदर्भ में, और फिर कुछ अन्य में जहां मसीह उन्हें हरा देता है और इसी तरह, वे यहाँ स्वर्गदूतों को ईश्वर द्वारा बनाए गए रूप में इंगित करते हैं। उन्होंने विद्रोह नहीं किया था।

सभी चीजें उसके द्वारा और उसके लिए बनाई गई थीं। यह एक समावेश है। उसके द्वारा सभी चीजें बनाई गई, 16 की शुरुआत, सभी चीजें उसके द्वारा बनाई गई, 16 का अंत।

इससे ज़्यादा ज़ोर देकर कहना मुश्किल है। बेटा पिता का प्रतिनिधि है। सृष्टि में बेटे की भूमिका है, जो भूमिका सिर्फ़ भगवान ही निभाते हैं।

इब्रानियों 1, तुरन्त, वही बात कहता है। पुत्र को परमेश्वर का महान और अंतिम भविष्यद्वक्ता कहने के बाद, यह कहता है, अर्थात्, इन अंतिम दिनों में, परमेश्वर ने अपने पुत्र के द्वारा हमसे बात की है, अपने पुत्र के द्वारा जिसे उसने सब वस्तुओं का वारिस नियुक्त किया है। अंत में वह सब कुछ का वारिस होगा।

तो, वह अंत है, लेकिन वह शुरुआत भी है। वह ओमेगा है, वह अल्फा भी है। क्योंकि वह कहता है, जिसे उसने पुत्र नियुक्त किया, जिसे परमेश्वर ने सभी चीज़ों का वारिस नियुक्त किया, जिसके द्वारा परमेश्वर ने दुनिया भी बनाई।

इन स्थानों पर पवित्रशास्त्र, और उससे भी अधिक, 1 कुरिन्थियों 8:6 में वह महत्वपूर्ण अंश, सिखाता है कि पुत्र सृष्टि में भाग लेता है। मैं जो कहने की कोशिश कर रहा हूँ वह यह है कि ईश्वरत्व के सभी तीन व्यक्ति सृष्टि के कार्य में भाग लेते हैं। स्वर्गदूत ऐसा नहीं करते।

मनुष्य ऐसा नहीं करते। देवदूत और मनुष्य दोनों ही प्राणी हैं। सृष्टिकर्ता-प्राणी का भेद शास्त्र में बुनियादी और सुसंगत है।

हम कभी भी निर्माता नहीं होंगे। हम हमेशा प्राणी ही रहेंगे। हम नई धरती पर महिमामंडित, पवित्र, पूरी तरह से मुक्त, पुनर्जीवित, रूपांतरित प्राणी होंगे।

लेकिन जीव, हम बने रहेंगे। वास्तव में, वह सृष्टिकर्ता-सृजन भेद हमारी शुरुआत का एक महत्वपूर्ण पहलू है, यह समझने के लिए कि अनंत काल कभी भी पर्याप्त समय नहीं होगा, इसलिए कहा जा सकता है। हम सृष्टिकर्ता-सृजन भेद के कारण कभी भी ईश्वर के ज्ञान या ईश्वर के आश्चर्य को समाप्त नहीं कर पाएंगे।

और कुछ संशयवादियों की आलोचनाओं के विपरीत, स्वर्ग, यानी नई पृथ्वी पर पुनर्जीवित जीवन, उबाऊ नहीं होगा। परमेश्वर असीम रूप से दिलचस्प है। पवित्र आत्मा भी सृष्टि के कार्य में भाग लेता है।

आप देखिए, ये लोग अपने अस्तित्व और अपने कार्यों में अविभाज्य हैं। परमेश्वर की आत्मा जल की सतह पर मँडरा रही थी, उत्पत्ति 1:2। अय्यूब कहते हैं, अय्यूब का व्याख्याशास्त्र कठिन है।

मेरे पादरी ने सेंट चार्ल्स, मिसौरी में वैन ली के अनुग्रह की वाचा का प्रचार किया। पूरी बाइबल से प्रचार किया। अय्यूब से प्रतिनिधि उपदेश देने में उन्हें कुछ महीने लगे।

रास्ते में, मैंने पूछा, यहाँ व्याख्याशास्त्र क्या है? रहस्योद्घाटन के सिद्धांत और इसी तरह के अन्य सिद्धांतों के संदर्भ में हम इससे कैसे संबंधित हैं? अय्यूब में सब कुछ वही है जो परमेश्वर हमें देना चाहता था, लेकिन मानदंड के बारे में क्या? धर्मशास्त्र के बारे में क्या? वह मुझसे सहमत था कि जब अय्यूब बोलता है या परमेश्वर बोलता है, तो हम इसे प्रामाणिक बाइबिल शिक्षा के रूप में ले सकते हैं। जब मित्र बोलते हैं, तो ऐसा नहीं होता। मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि यह समान है, लेकिन बाइबिल कभी-कभी शैतान या राक्षसों के भाषण को सटीक रूप से दर्ज करती है।

मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि अय्यूब के मित्र शैतानी हैं या ऐसा कुछ, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि शैतान या राक्षसों की शिक्षाएँ सच हैं। कभी-कभी ऐसा होता भी है। विडंबना यह है कि यीशु की सांसारिक सेवकाई के दौरान कई बार उनका धर्मशास्त्र शिष्यों से बेहतर प्रतीत होता है, लेकिन निश्चित रूप से वे विश्वसनीय स्रोत नहीं हैं।

तो, प्रेरणा और अचूकता का मतलब है कि परमेश्वर जो कुछ भी कहते हैं उसे सटीक रूप से दर्ज करता है। ऐसा ही अय्यूब के दोस्तों के साथ भी है, लेकिन हम अय्यूब के दोस्तों के धर्मशास्त्र को बैंक में नहीं ले जा सकते। वास्तव में, यह संदिग्ध है।

लेकिन जब परमेश्वर बोलता है, तो बेशक, जैसा कि अंतिम अध्यायों में है, यह न केवल सटीक है, बल्कि यह सच भी है। और यही बात अय्यूब के लिए भी लागू होती है। वह, परमेश्वर के भविष्यवक्ता के रूप में, परमेश्वर की सच्चाई बोलता है।

और यहाँ हमारे पास अय्यूब 33:4 है, परमेश्वर की आत्मा ने मुझे बनाया है, और सर्वशक्तिमान की साँस मुझे जीवन देती है। ग्रीक की तरह, हिब्रू में भी साँस, हवा या आत्मा के लिए शब्द वही है। कम से कम एक शब्द तीनों के लिए कर्तव्य करता है, रूआख।

और यहाँ इसका प्रयोग किया गया है। अय्यूब ने कहा, परमेश्वर की आत्मा ने मुझे बनाया है, और सर्वशक्तिमान की साँस मुझे जीवन देती है। पवित्र आत्मा अय्यूब की रचना में शामिल थी, यहाँ तक कि उसकी माँ के गर्भ में भी।

भजन 104 और श्लोक 20 के बारे में क्या ख्याल है, उद्धरण, जब आप अपनी आत्मा भेजते हैं, तो वे बनते हैं, सभी जीव, भजन सभी जानवरों की गणना कर रहा है, और आप धरती का चेहरा नया कर देते हैं। वह श्लोक सृजन और प्रोविडेंस के बीच धुंधला हो जाता है, और यह एक अच्छी बात है। यह ठीक है।

ईश्वर दोनों का रचयिता है। इसलिए हमारा कहना यह है कि तीनों व्यक्ति अविभाज्य हैं। वे सभी सृष्टि में भाग लेते हैं।

और फिर भी, वे अलग-अलग हैं। हम उन्हें एक दूसरे के साथ भ्रमित नहीं करते हैं। इसलिए, हम यह नहीं कहते हैं कि, ओह, बेटा पहला व्यक्ति है, और पिता उसके माध्यम से सृजन करता है।

नहीं, नहीं, पिता प्रथम व्यक्ति है। तीनों व्यक्ति अनंत काल से समान रूप से ईश्वर हैं, शक्ति और महिमा और ईश्वरत्व में समान हैं। लेकिन पिता प्रथम व्यक्ति है, और वह पुत्र के द्वारा, पुत्र के द्वारा सृष्टि करता है।

नया नियम ऐसे ही पूर्वसर्गों का उपयोग करता है। और इसी तरह, आत्मा सृष्टि में पिता का कार्यकर्ता है। इसके अलावा, तीनों व्यक्ति छुटकारे में भाग लेते हैं।

पतरस की बात सुनिए। चुने हुए लोगों के लिए, जो निर्वासन में रह रहे हैं, पोंटस, गलातिया, कप्पादोकिया, एशिया और बिथुनिया में फैले हुए हैं। मैं बस ESV की ओर मुड़ने जा रहा हूँ।

1 पतरस 1:1 और 2. यीशु मसीह के प्रेरित पतरस की ओर से उन लोगों को जो पाँच रोमी प्रान्तों एशिया माइनर, पुन्तुस, गलातिया, कप्पादोकिया, एशिया और बिथुनिया में फैले हुए चुने हुए बंधुओं के नाम। चुने हुए बंधुओं के अनुसार, परमेश्वर पिता के पूर्वज्ञान के अनुसार, आत्मा के पवित्रीकरण में, यीशु मसीह की आज्ञाकारिता और उसके लहू के छिड़काव के लिए चुने गए। अनुग्रह और शांति आप पर बरसती रहे।

तीनों व्यक्ति अब उद्धार, छुटकारे में भाग लेते हैं। पिता पहले से जानता है, आत्मा पवित्र करता है, और पुत्र का लहू छिड़कता है, विश्वासियों को शुद्ध करता है। तीनों छुटकारे, उद्धार का दिव्य कार्य करते हैं।

कोई भी स्वर्गदूत या मनुष्य ऐसा नहीं करता, बल्कि केवल परमेश्वर ही ऐसा करता है। इसलिए, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा परमेश्वर हैं। फिर भी, शास्त्र में हमेशा यही कहा गया है कि पिता ही पूर्वज्ञानी है।

पुत्र ही एकमात्र ऐसा है जो देहधारी हुआ, जिसने अपना लहू बहाया, और जो बलिदान की मृत्यु को प्राप्त हुआ। मसीह के लहू की पृष्ठभूमि पुराने नियम में बैलों, बकरियों और मेमनों का लहू है। अर्थात्, यह उसकी हिंसक मृत्यु की बात करता है, जो सर्वोच्च बलिदान है।

सभी बलिदानों का बलिदान, जो इब्रानियों 9:15 के अनुसार, पुराने नियम के बलिदानों को प्रभाव देता है। हाँ, मैं जाँच करता हूँ क्योंकि मैं टेप पर हमेशा के लिए गलत प्रमाण पाठ नहीं देना चाहता, यह वीडियोटेप के लिए है, यह भयानक है। तो, आत्मा, हालाँकि तीनों व्यक्ति वास्तव में शास्त्र में पवित्र करते हैं, यहाँ आत्मा पवित्रीकरण का कार्य करता है।

क्या हम इन कार्यों का अर्थ बता सकते हैं? हमने कहा है कि ये सभी उद्धार के बारे में बात करने के तरीके हैं। पिता पहले से जानता है, आत्मा पवित्र करती है, पुत्र का लहू छिड़कता है और शुद्ध करता है। ज़रूर हम बता सकते हैं।

यहाँ पूर्वज्ञान का मतलब केवल दूरदर्शिता या ईश्वर द्वारा तथ्यों को पहले से जानना नहीं है। आइए स्पष्ट करें: ईश्वर सभी तथ्यों को पहले से जानता है। ईश्वर के पास पूर्ण दूरदर्शिता है, पूर्ण सरल ज्ञान है, दार्शनिक इसे कहते हैं।

लेकिन इस बारे में बात नहीं की गई है। जैसा कि पौलुस के लेखन में, जब पौलुस उद्धारक पूर्वज्ञान से निपटता है, तो इसका मतलब है प्यार के लिए। इसका मतलब सिर्फ चुनना नहीं है; इसका मतलब है कि परमेश्वर ने अपने लोगों पर पहले से ही अपना प्यार रखा है।

अगर आप चाहें तो यह एक वाचागत पूर्वज्ञान है। परमेश्वर अपने लोगों को चिन्हित करता है, उन पर अपना प्रेम रखता है। यही ये निर्वासित लोग हैं।

और वैसे, यह पूरी तरह से यहूदी भाषा है, लेकिन अध्याय चार की शुरुआत में संकेत मिलता है कि ये गैर-यहूदी पाठक हैं। 1 पतरस में मैंने जितनी भी टिप्पणियाँ देखी हैं, उनमें कहा गया है कि वहाँ की जीवनशैली, 1 पतरस 4 की शुरुआत में भ्रष्ट जीवनशैली, 1 पतरस 4:3 के अनुरूप नहीं है। जो समय बीत चुका है, वह गैर-यहूदियों की इच्छा के अनुसार काम करने के लिए पर्याप्त है, कामुकता, वासना, नशे, रंग-रंज, शराब पार्टी और अधर्मी मूर्तिपूजा में जीना। कोई नहीं कहता कि वे यहूदी हैं।

इस प्रकार, यहूदी, उद्धरण चिह्नों में, 1:1 और 2 में, चर्च के बारे में नए इज़राइल के रूप में बात करने का एक तरीका है, जैसा कि नए नियम में अक्सर होता है। शायद सभी धर्मग्रंथों में सबसे प्रसिद्ध, 1 पतरस 2:9 से 10 में, इज़राइल के पुराने नियम के प्रमुख पदनाम, निर्गमन 19 में वापस जाते हैं, जो निर्गमन 20 में कानून दिए जाने से ठीक पहले है, ईसाई चर्च को आध्यात्मिक इज़राइल के रूप में पहचानने के लिए लिया गया है। यह इस सवाल का फैसला नहीं करता है कि क्या परमेश्वर ने इज़राइल के साथ काम करना बंद कर दिया है।

रोमियों 11 के बारे में मेरी समझ यह है कि परमेश्वर ने जातीय इस्राएल, अब्राहम और सारा के वंशजों के साथ काम करना बंद नहीं किया है, बल्कि उसने मसीह के आगमन के बीच में उनमें से बड़ी संख्या को बचाया है, जो पहले से ही है, और मसीह की वापसी के समय के करीब उसे एक बड़ी फसल मिलेगी। इस तरह, सभी इस्राएल, सभी रक्त इस्राएली बच जाएँगे। यह सवाल कि क्या नया नियम इस्राएल राष्ट्र के बारे में कुछ सिखाता है, एक अधिक बहस का विषय है।

मुझे लगता है कि ऐसा नहीं है। मैं उन लोगों का सम्मान करता हूँ जो ऐसा सोचते हैं, लेकिन निश्चित रूप से परमेश्वर के उपहार और बुलाहट अपरिवर्तनीय हैं, 1 कुरिन्थियों 11। परमेश्वर ने अपने लोगों के साथ काम करना बंद नहीं किया है।

जातीय इस्राएलियों को बचाया जा रहा है और हमारे प्रभु की वापसी के समय और भी बड़ी संख्या में बचाया जाएगा। पिता चुने हुए निर्वासितों को पहले से जानता है। वह उनसे पहले से प्रेम करता है।

केवल परमेश्वर ही ऐसा करता है। यह उद्धार का वचन है। परमेश्वर उन पर अपना प्रेम रखता है, और इसलिए आप निश्चित हो सकते हैं कि वे बचाए जाएँगे।

रोमियों 8:30 और 31. जिन्हें परमेश्वर ने पहले से जान लिया, उन्हें पहले से ठहराया भी; जिन्हें उसने पहले से ठहराया, उन्हें बुलाया भी।

उसने सुसमाचार के ज़रिए उन्हें प्रभावशाली ढंग से अपने पास बुलाया। जिन लोगों को उसने बुलाया, उन्हें उसने धर्मी भी ठहराया। उसने मसीह में उन्हें धर्मी घोषित किया।

जिन लोगों को उसने धर्मी ठहराया, उन्हें उसने महिमा भी दी। यह एक अलंकार है, और मैं इसका नाम भूल गया हूँ, लेकिन जूडिथ गुंडी वुल्फ ने अपनी पुस्तक, पॉल एंड पर्सिवेरेंस, क्लाइमेक्स में दिखाया है, इसे कहा जाता है। यह पीछे तक पहुँचता है।

वे लोग जिन्हें? यह आगे तक पहुँचता है। वह भी। यह एक श्रृंखला में कड़ियों की तरह है, जैसा कि प्यूरिटन कहा करते थे।

दरअसल, यह बुरा नहीं है। यह गलत नहीं है। ईश्वर ही इसका रचयिता है।

वह पहले से जानता है, पहले से तय करता है, बुलाता है, न्यायोचित ठहराता है और महिमा देता है। सभी को सरल भूतकाल में रखा गया है, जो दर्शाता है कि ये कार्य परमेश्वर की योजना के अनुसार किए गए हैं और जिनसे उसने पहले से प्रेम किया है, वे महिमा पाने से नहीं चूकेंगे। पिता परमेश्वर के लोगों को पहले से जानता है।

वह उनसे पहले से ही प्रेम करता है। वह उन पर अपना वाचा-संबंधी प्रेम तब भी रखता है, जब वे कभी विश्वास भी नहीं करते। यह लोगों को विश्वास में आने का आदेश देता है।

यह पिता द्वारा चुने जाने, पुत्र द्वारा छुड़ाए जाने, आत्मा द्वारा लागू किए जाने का छुटकारे का ऐतिहासिक क्रम नहीं देता, क्योंकि पिता ने प्राप्तकर्ताओं, 1 पतरस के विश्वासी प्राप्तकर्ताओं से पहले से प्रेम किया था, लेकिन वे यीशु को तब नहीं जान पाए, जब वह मरा, बल्कि तब जब उन्होंने सुसमाचार सुना, और पवित्र आत्मा ने उन्हें पवित्र किया। आत्मा के पवित्रीकरण में, पवित्रीकरण प्रारंभिक, प्रगतिशील और अंतिम है। यहाँ यह प्रारंभिक है।

आत्मा ने उन लोगों को अलग किया जिन्हें पिता ने पहले से प्यार किया था ताकि वे पुत्र पर विश्वास करें। जब उन्होंने सुसमाचार पर विश्वास किया तो आत्मा ने उन्हें संत बना दिया। आप कहते हैं, यहाँ सुसमाचार पर विश्वास करने के लिए कहाँ लिखा है? आत्मा के पवित्रीकरण में शब्द, क्योंकि, शब्द का अर्थ है यीशु मसीह की आज्ञाकारिता और उसके खून से छिड़कना।

सुसमाचार एक आदेश है, और पतरस, जैसा कि पौलुस कभी-कभी करता है, विश्वास को सुसमाचार का पालन करने के रूप में संदर्भित करता है। मेरे पास उन स्थानों को दिखाने का समय नहीं है जहाँ आज्ञाकारिता और आज्ञाकारिता का अर्थ विश्वास और आस्था है, और अवज्ञा और अवज्ञा का अर्थ अविश्वास और अविश्वास है 1 पतरस में, लेकिन निर्णायक बात 1 पतरस 4:17 है। पुराने नियम की तरह, परमेश्वर अपने लोगों के लिए सबसे बुरे न्याय को सुरक्षित रखता है क्योंकि वह उनसे प्रेम करता है। न्याय का समय परमेश्वर के घराने से शुरू होना चाहिए, 1 पतरस 4:17। और यदि यह हमसे शुरू होता है, तो उन लोगों का क्या परिणाम होगा जो परमेश्वर के सुसमाचार का पालन नहीं करते हैं? सुसमाचार के प्रति विश्वासपूर्ण प्रतिक्रिया कभी-कभी शास्त्रों में इंगित की जाती है, न केवल पतरस में, बल्कि पौलुस में भी, 2 थिस्सलुनीकियों 1; जो

लोग सुसमाचार का पालन नहीं करते हैं, वे यीशु के वापस आने पर अवज्ञा, अवज्ञा के रूप में निंदा किए जाएंगे।

तो, इसके विपरीत सत्य है। आत्मा लोगों को अलग करती है, जिन लोगों को पिता ने पहले से प्यार किया था, वह उन्हें यीशु मसीह की आज्ञाकारिता के लिए अलग करती है जैसा कि सुसमाचार में पेश किया गया है। हमारा पूरा मुद्दा वास्तव में यह है कि मैं व्याख्या में खो जाता हूँ, जो मुझे पसंद है, लेकिन पूरा मुद्दा यह है कि तीनों व्यक्ति उद्धार का कार्य करते हैं, लेकिन उनकी अलग-अलग भूमिकाएँ हैं।

पिता हमेशा केवल पिता से प्रेम करता है, आत्मा पवित्र करती है, यह सच नहीं है कि केवल आत्मा, पिता और पुत्र ही कभी-कभी ऐसा करते हैं, लेकिन यहाँ आत्मा प्रारंभिक पवित्रता में पवित्र करने वाला है, जिसके परिणामस्वरूप मसीह में विश्वास, सुसमाचार के प्रति आज्ञाकारिता होती है, जिसका ध्यान, निश्चित रूप से, यीशु मसीह पर है, और जिसके परिणामस्वरूप लोगों पर उनके रक्त का छिड़काव किया जाता है। तो, यहाँ सब कुछ है। पिता लोगों से प्रेम करता है, आत्मा उन्हें पवित्र करती है, वह उन्हें अलग करता है, ताकि वे सुसमाचार पर विश्वास कर सकें, यीशु की आज्ञा मान सकें जैसा कि सुसमाचार में पेश किया गया है।

सुसमाचार एक आदेश है : प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करो, और तुम बच जाओगे, और वे ऐसा करते हैं। उनके विश्वास का परिणाम शुद्धिकरण, शुद्धिकरण, पापों की क्षमा, यीशु के रक्त से छिड़का जाना, प्रभु के एक बार के बलिदान का आवेदन, और मसीह के प्रायश्चित्त बलिदान का उन लोगों पर लागू होना है जो विश्वास करते हैं। पिता प्रेम करता है, आत्मा पवित्र करती है, पुत्र का रक्त शुद्ध करता है, छिड़कता है।

व्यक्ति अविभाज्य हैं; वे एक ईश्वर हैं, लेकिन वे अलग हैं; हम उन्हें भ्रमित नहीं करते हैं; आत्मा के रक्त के छिड़काव जैसी कोई चीज नहीं है; आत्मा में रक्त नहीं है, या पिता के रक्त का छिड़काव, यह हास्यास्पद है। मेरा मतलब उन अभिव्यक्तियों के साथ कोई असम्मान नहीं है, मैं बस इस तरह की बात करने की मूर्खता को दिखाना चाहता हूँ, जो इस तथ्य को रेखांकित करता है कि बाइबिल व्यक्तियों को अलग करता है, यह भ्रमित नहीं करता है। वास्तव में, इफिसियों 1 सबसे प्रसिद्ध स्थान है जहाँ हम इनमें से कुछ भूमिकाओं को देखते हैं, इफिसियों 1: 3 से 14, ग्रीक में एक विशाल वाक्य, मसीह के साथ एकता द्वारा हावी है, और यह भगवान के लोगों के उद्धार की बात करता है।

यदि आप मुझसे पूछें, इफिसियों 1:3 से 14 का उद्देश्य क्या है? उत्तर यह है कि परमेश्वर की महिमा हो और उसकी स्तुति हो, पिता, पुत्र और आत्मा, उनके कार्य के लिए, परमेश्वर के लोगों को बचाने में उनकी भूमिका के लिए। हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता धन्य हैं, पद 3। पिता के गौरवशाली अनुग्रह की स्तुति के लिए, पद 6। बारह, उसकी महिमा की स्तुति के लिए, 14, उसकी महिमा की स्तुति के लिए। इस अंश का उद्देश्य यह है कि परमेश्वर की महिमा हो।

इसलिए, यदि हमारा धर्मशास्त्र परिपूर्ण है, जो हममें से कोई भी नहीं करता, लेकिन यदि हमारे पास होता भी, और यह हमें पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा की स्तुति करने के लिए प्रेरित नहीं करता, तो हमारा धर्मशास्त्र इतना परिपूर्ण नहीं होता, और हम सिद्धांत के उद्देश्य को जी नहीं पाते और लागू नहीं कर पाते। अरे, कई साल पहले, डीए कार्सन ने स्क्रिप्चर एंड ट्रुथ नामक एक किताब पढ़ी थी, डॉन कार्सन ने बाइबिल की एकता और व्यवस्थित धर्मशास्त्र की संभावना पर एक लेख लिखा था, जिसमें उन्होंने दिखाया था कि जब 1800 के दशक में बाइबिल का आलोचनात्मक अध्ययन विकसित हुआ, और लोगों ने अब विश्वास नहीं किया, तो पाठ के प्रति पूर्वधारणाओं पर विश्वास करना अपने आप शुरू हो गया, कई चीजें हुईं। नियमों को बुरी तरह से तोड़ दिया गया, और यह इतना बुरा हो गया, यह इतना बुरा हो गया, कि व्यवस्थित धर्मशास्त्र असंभव है।

यदि बाइबल नए नियम की दो बड़ी किस्तों में परमेश्वर का एक वचन नहीं है, तो कोई व्यवस्थित धर्मशास्त्र नहीं हो सकता। इसलिए, यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि उदार सेमिनारियों में इस तरह के पाठ्यक्रम हैं। कुलुस्सियों के साथ समस्या यह है कि अलग-अलग पुस्तकों का अध्ययन, या यहाँ तक कि बाइबिल धर्मशास्त्र की आड़ में जाना, बाइबिल की शिक्षाओं का विकल्प है।

उनके दिमाग में सुसंगत, एकीकृत शिक्षण जैसी कोई चीज नहीं है, क्योंकि व्यवस्थित धर्मशास्त्र की संभावना पुराने और नए नियमों की एक प्रेरित बाइबिल में विश्वास पर निर्भर है। इसलिए, कभी-कभी आपके पास इन जगहों पर पाठ्यक्रम होते हैं, जैसे कि यह। लूकन धर्मशास्त्र, ठीक है, जो लूक का अध्ययन करता है, और शायद कार्य करता है, और धार्मिक सिद्धांतों को खींचता है, प्रोफेसर के दिमाग में कोई संभावना नहीं है कि वे चीजें जोहानिन, या पॉलीन, या पेट्रिन धर्मशास्त्र के साथ सुसंगत हैं, उदाहरण के लिए।

हम इन सब बातों को अस्वीकार करते हैं। हम उन्हें ईश्वर की छवि में बनाए गए मानव प्राणी के रूप में सम्मान देंगे। हम उनके लेखन से सीख सकते हैं, और हम ऐसा करते भी हैं।

लेकिन दिन के अंत में, हम मानते हैं कि यह व्यवस्थित धर्मशास्त्र है, क्योंकि हम 2 तीमुथियुस 3, 16, 17 पर विश्वास करते हैं, सभी शास्त्र ईश्वर-प्रेरित हैं, यह ईश्वर द्वारा दिया गया है, और यह शिक्षा, फटकार, सुधार और धार्मिकता में शिक्षा के लिए लाभदायक है। यह शिक्षण के लिए लाभदायक है। हम ईश्वर द्वारा हमें दी गई शिक्षा को समझने के लिए उनके प्रेरित वचन का अध्ययन कर सकते हैं।

और इफिसियों 1:3 से 14 में, इस महान शिक्षा का उद्देश्य परमेश्वर की महिमा, परमेश्वर की स्तुति है, और हम देखते हैं कि तीन व्यक्ति उद्धार का कार्य करते हैं। वे अलग-अलग भूमिकाएँ निभाते हैं। पिता की भूमिका चुनाव है।

परमेश्वर ने हमें संसार की नींव रखने से पहले मसीह में चुना है। पिता की भूमिका पूर्वनियति है। प्रेम में, उसने हमें यीशु मसीह के माध्यम से पुत्रों के रूप में गोद लेने के लिए पूर्वनियत किया, पद 5।

यहाँ मेरा प्रलोभन एक पूर्ण व्याख्या करने का है, जो अभी उद्देश्य नहीं है। हम यह दिखाने की कोशिश कर रहे हैं कि तीन त्रित्ववादी व्यक्ति अविभाज्य हैं, लेकिन वे अलग-अलग हैं। यहाँ यह नहीं कहा गया है कि आत्मा चुनता है या पूर्वनिर्धारित करता है, या कि मसीह चुनता है या पूर्वनिर्धारित करता है।

वास्तव में, यूहन्ना 15 के मध्य में, बाइबल में एक जगह पर पुत्र चुनाव करता है। तुमने मुझे नहीं चुना। मैंने तुम्हें चुना और तुम्हें नियुक्त किया कि तुम जाओ और फल लाओ।

तुम संसार के नहीं हो, लेकिन मैंने तुम्हें संसार से चुना है। डीए कार्सन ने अपनी पुस्तक दिव्य संप्रभुता और मानवीय जिम्मेदारी में दिखाया है कि यह जॉन के चुनाव के तीन विषयों में से एक है, अन्य दो हैं पिता द्वारा लोगों को पुत्र को देना, और परमेश्वर के लोगों की पूर्ववर्ती या पूर्व पहचान, उनके विश्वास करने से पहले भी। तुम विश्वास नहीं करते, जॉन 10, यीशु अपने दुश्मनों से कहते हैं, क्योंकि तुम मेरी भेड़ नहीं हो।

अब, यह सच है। वे उसकी भेड़ें नहीं हैं क्योंकि वे विश्वास नहीं करते, लेकिन वह ऐसा नहीं कह रहा है। वे इस पर विश्वास नहीं करते क्योंकि वे उसकी भेड़ें नहीं हैं।

मेरी भेड़ें मेरी आवाज़ सुनती हैं और वे मेरा अनुसरण करती हैं और मैं उन्हें अनंत जीवन देता हूँ और इसी तरह की अन्य बातें। यानी, यह एक विषय है, मुख्य विषय भी नहीं। आस्था 99 या 100 बार आती है, लेकिन एक विषय है, और यह एक पूर्वनिर्धारित विषय है, भेड़ और बकरियाँ हैं, मैं उन्हें बुलाऊँगा, और उनके पास विश्वास करने या न करने से पहले वे पहचानें होती हैं, जो आस्था या अविश्वास वास्तव में उनकी पूर्व पहचानों को प्रकट करता है, जो ईश्वर में छिपी हुई हैं।

वैसे भी, इफिसियों 1:3 और 4 और 5 में, पिता चुनाव करता है, और पिता पूर्वनिर्धारित करता है। पुत्र, उसमें, पद 7 में, उसे पिछले पद में प्रिय कहा गया है, उसमें हमें उसके लहू के द्वारा छुटकारा मिलता है। पुत्र अपना लहू बहाता है और पुत्र छुटकारा दिलाता है।

पिता अपना खून नहीं बहाता, पिता के पास खून नहीं है, केवल पुत्र ही देहधारी हुआ। आत्मा उद्धार नहीं करती। पुत्र क्रूस पर मरता है, तीसरे दिन फिर से जी उठता है, और पुत्र अपनी बलिदानी मृत्यु के साथ उद्धार करता है।

आत्मा एक भूमिका निभाता है, अर्थात्, वह परमेश्वर की मुहर है। पद 13, मसीह में भी, जब तुमने सत्य का वचन, अपने उद्धार का सुसमाचार सुना, और उस पर विश्वास किया, तो तुम पर मुहर लग गई। उसमें, तुम पर प्रतिज्ञा किए गए पवित्र आत्मा की भी मुहर लग गई।

आत्मा गारंटी है, अरबी, अरामी ऋण शब्द, जमा, और वह मुहर है, स्प्रेगिस, मुहर। फिर से, इसका मतलब गारंटी जैसा कुछ है। इसका मतलब है कि परमेश्वर ने अपने लोगों को मुहर लगा दी है।

मुहर लगाने का यह सिद्धांत पौलुस के लिए एक छोटा सा राग है। यह 2 कुरिन्थियों 1:19 और 20, इफिसियों 4, 30 और यहाँ, इफिसियों 1:13, केवल उन तीन स्थानों पर आता है। इसमें स्वामित्व का एक अंतर्निहित भाव है, लेकिन इसका मुख्य विचार संरक्षण है।

परमेश्वर अपने लोगों को बचाता है, वह मसीह के साथ उनके मिलन को सील करता है, और वह उन्हें पवित्र आत्मा के साथ सील करता है। पिता सील नहीं है, पुत्र सील नहीं है, पवित्र आत्मा सील है। इस प्रकार, इस मार्ग पर संक्षेप में और शिक्षा देते हुए, तीन व्यक्ति एक परमेश्वर हैं, क्योंकि केवल परमेश्वर ही बचाता है, और वे बचाते हैं।

इस प्रकार वे अविभाज्य हैं, और अपने काम में, वे अविभाज्य हैं, लेकिन वे अलग-अलग पहचाने जा सकते हैं। उन्हें अलग-अलग पहचानना चाहिए। हम तीनों व्यक्तियों को भ्रमित नहीं करते हैं।

उनकी अलग-अलग भूमिकाएँ हैं, और यहाँ, पिता पिता की पूर्वनियति को चुनता है। वह पवित्रीकरण को चुनता है, कुछ कारणों से जिन्हें मैं अभी स्पष्ट नहीं करना चाहता, कुलुस्सियों 1 के समानांतर, इसका अंतिम पवित्रीकरण। वह गोद लेने के लिए पूर्वनियति करता है।

इसी तरह, मुझे लगता है कि यह अंतिम दत्तक ग्रहण के लिए है। पुत्र अपने लहू से, क्रूस पर अपनी हिंसक मृत्यु से छुड़ाता है, और पिता विश्वासियों पर मुहर लगाता है। वह मसीह के साथ उनके मिलन पर मुहर लगाता है, और यह मुहर पवित्र आत्मा है।

मुहर ईश्वरत्व का एक व्यक्ति है। इसलिए, एक बार फिर हम देखते हैं कि पिता, पुत्र और आत्मा अविभाज्य हैं, लेकिन अलग-अलग हैं। लोग कभी-कभी अपवाद के रूप में क्रूस पर त्याग की यीशु की ऊँची चीख का हवाला देते हैं।

मत्ती 27, 46. अगर मैं सही कहूँ तो मैं रोता हूँ, इसलिए मैं सही नहीं कह रहा हूँ। यह एक चीख थी।

हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों त्याग दिया? तूने मुझे क्यों त्याग दिया? तूने मुझे क्यों त्याग दिया ? इस शब्द का अर्थ है। मत्ती 27:46। क्या यह अलगाव नहीं है? हाँ।

क्या यह व्यक्ति के बीच एक अस्तित्वगत अलगाव नहीं है? नहीं, यह असंभव है। ईश्वर एक त्रि-एकता है। वह एक में तीन है।

ईश्वर का ईश्वर होना यही अर्थ रखता है। यह पुकार वास्तव में पिता और पुत्र के बीच अलगाव की ओर इशारा करती है, लेकिन यह अस्तित्व के क्रम में, सत्तामीमांसा के क्रम में नहीं होती है। यह सत्तामीमांसा या आध्यात्मिक रूप से नहीं होती है।

यह संगति का एक अस्थायी अलगाव है जब पुत्र ने दुनिया के पापों को उठाया। मैं इसे कमज़ोर करने या इसे कम भयानक बनाने की कोशिश नहीं कर रहा हूँ। यह अविश्वसनीय है।

अनंत काल से, पिता और पुत्र एक दूसरे से प्रेम करते रहे हैं। और अब, जैसा कि गीत में कहा गया है, पिता पुत्र से मुंह मोड़ लेता है। यह अविश्वसनीय है।

यह हमारे लिए समझ से परे है कि परमेश्वर हमसे इस तरह प्यार करता है। लेकिन उसने किया। और यह अस्तित्व का अलगाव नहीं है, बल्कि यह संगति का एक अस्थायी अलगाव है।

और वह जो पीड़ा में चिल्लाया, हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों त्याग दिया? घंटों बाद कहता है, हे पिता, मैं अपनी आत्मा को तेरे हाथों में सौंपता हूँ। भयानक अलगाव, संगति का भयानक अलगाव, अस्थायी है। और परमेश्वर, रहस्यमय तरीके से, समय की एक सीमित अवधि में, व्यक्ति के माध्यम से, एक अनंत, सीमित व्यक्ति के माध्यम से, एक शाश्वत मुक्ति को पूरा करता है।

और मसीह को सलीब पर तीन घंटे तक अनंत दंड के बराबर की सज़ा भुगतनी पड़ती है। यह समझ में नहीं आता। हम पूरी तरह से समझ नहीं सकते।

विकल्प यह है कि वह अभी भी क्रूस पर होगा और एक शाश्वत अभिशाप होगा और किसी को भी नहीं बचा सकता। नहीं। इसके लिए दो विकल्प हैं।

यीशु अपने लोगों के स्थान पर मर जाता है, और परमेश्वर अपने दिव्य-मानव पुत्र की अस्थायी पीड़ा को उन सभी लोगों की शाश्वत पीड़ा के बराबर मानता है जो उसे अस्वीकार करते हैं। हम इसे प्याले की छवि में देखते हैं। प्रकाशितवाक्य 14 कहता है कि जो लोग मसीह में विश्वास नहीं करते हैं वे परमेश्वर के क्रोध का प्याला पीएँगे और दिन-रात हमेशा-हमेशा के लिए पीड़ित होंगे।

यीशु ने क्रूस पर परमेश्वर के क्रोध का प्याला पी लिया, फिर से, सीमित समय अवधि में। अन्यथा, वह अभी भी वहाँ होता, और कोई भी बचाया नहीं जा सकता था, और वह एक शाश्वत अभिशाप होता। वास्तव में, हालाँकि केवल यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया था, हम व्यक्तियों को भ्रमित नहीं करते हैं।

फिर भी, तीनों व्यक्ति अलग नहीं हुए। क्योंकि मसीह में, परमेश्वर संसार को अपने साथ मिला रहा था। 2 कुरिन्थियों 5:19। परमेश्वर अपने पुत्र में, अपने पुत्र के द्वारा ऐसा कर रहा था।

और इसके अलावा, कम से कम एक बार, आत्मा प्रायश्चित्त कार्य में शामिल होती है। आत्मा क्रूस पर नहीं मरती, लेकिन वह यीशु के बलिदान को पूर्ण बनाती है। मसीह ने, सनातन आत्मा के माध्यम से, खुद को बिना किसी दोष के परमेश्वर को अर्पित किया।

इब्रानियों 9:14. व्यक्तियों को भ्रमित न करें। कभी नहीं। व्यक्तियों में अंतर करें। हमेशा। व्यक्तियों की एकता पर जोर दें। हाँ, और आमीन।

हालाँकि हम तीनों व्यक्तियों को अलग नहीं करते, हम उनमें अंतर करते हैं और उन्हें भ्रमित नहीं करते। बेटा अवतार लेता है, पिता या आत्मा नहीं। बेटा क्रूस पर मरता है, अन्य दो व्यक्तियों में से कोई नहीं।

यीशु के बपतिस्मा के समय तीनों व्यक्ति मौजूद थे। जब वह पानी से बाहर आता है, तो आत्मा उस पर उतरती है, और पिता स्वर्ग से बोलता है। मत्ती 3:16-17। जब त्रिदेव शुरू से अंत तक उद्धार का कार्य करते हैं, तो शास्त्र व्यक्तियों को भ्रमित नहीं करता है।

पिता उद्धार की योजना बनाता है। इफिसियों 1:4. और मैंने पद 11 भी नहीं पढ़ा। यह एक शक्तिशाली कथन है। मसीह में, हमने एक विरासत प्राप्त की है, जो उसके उद्देश्य के अनुसार पूर्वनिर्धारित है जो अपनी इच्छा की सलाह के अनुसार सभी चीजें करता है।

पिता उद्धार की योजना बनाता है। इफिसियों 1:4. और 11. पुत्र इसे पूरा करने के लिए मर जाता है। श्लोक 7. वह अपने खून से पापियों को छुड़ाता है, और आत्मा परमेश्वर की मुहर है, जो छुटकारे के दिन तक विश्वासियों की रक्षा करती है। इफिसियों 1.13.14. इफिसियों 4.30. एक ही परमेश्वर है।

पिता परमेश्वर है। पुत्र परमेश्वर है। पवित्र आत्मा परमेश्वर है।

तीनों त्रित्ववादी व्यक्ति अविभाज्य हैं, लेकिन अलग-अलग हैं। और फिर, हमें यह कहना होगा कि पिता, पुत्र और आत्मा एक दूसरे में निवास करते हैं। यह एक बहुत ही ज़बरदस्त शिक्षा है।

इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि चर्च ने त्रिएकत्व के सिद्धांत को तैयार करने के लिए संघर्ष किया क्योंकि बाइबल हमें यह बताती है, यह हमें हाथ पकड़कर ले जाती है और हमें उसी दिशा में ले जाती है। बाइबल का विषय तीन त्रिएकत्व व्यक्तियों की एकता पर जोर देता है। वे एक दूसरे में हैं, या वे परस्पर एक दूसरे में निवास करते हैं।

जॉन के सुसमाचार में, यीशु कहते हैं कि पिता और पुत्र एक दूसरे में रहते हैं, या एक दूसरे में रहते हैं। मैं तुरंत कह दूँ, यह जॉन की आदत है। वह पवित्र आत्मा में विश्वास करता है।

यीशु ने विदाई भाषण में आत्मा के बारे में कुछ महत्वपूर्ण बातें कही हैं। उन्होंने कुछ महत्वपूर्ण सत्य सिखाए हैं, जैसे कि आत्मा परमेश्वर के लोगों में वास करेगी। जॉन के सुसमाचार में आत्मा पहले भी सक्रिय है।

लेकिन जब यूहन्ना इस तरह की परस्पर वास की धारणा को सूत्रबद्ध करता है, तो वह आत्मा को छोड़ देता है। वह आम तौर पर आत्मा को पेंटेकोस्ट के बाद के रूप में देखता है, पेंटेकोस्ट के बाद अपने प्रमुख कार्य को आगे बढ़ाता है, जो सच है। लेकिन हमें कभी-कभी यूहन्ना के विचारों को व्यवस्थित करने और पिता और पुत्र की उनकी शिक्षा को त्रिएकत्व के पूर्ण विकसित सिद्धांत में बदलने की आवश्यकता है।

यह व्यवस्थित धर्मशास्त्र का कार्य है। इसे सावधानी से किया जाना चाहिए, लेकिन ऐसा किया जाना चाहिए क्योंकि यूहन्ना हमें पूरी तरह से नहीं ले जाता है, हालाँकि वह उल्लेखनीय चीजें करता है। यूहन्ना के सुसमाचार में, यीशु कहते हैं कि पिता और पुत्र एक दूसरे में रहते हैं या एक दूसरे में रहते हैं, या वे एक दूसरे में हैं।

ये समानार्थी अभिव्यक्तियाँ हैं। यीशु कहते हैं कि पिता उनमें है, और वह पिता में है। यूहन्ना 14:10. क्या तुम विश्वास नहीं करते, फिलिप्पुस, कि मैं पिता में हूँ, और पिता मुझ में है? जो बातें मैं तुमसे कहता हूँ, वे अपनी ओर से नहीं कहता।

पिता जो मुझमें रहता है, अपने काम करता है। यूहन्ना 14:10. यूहन्ना 17:22-23 में यीशु पिता से प्रार्थना करता है। मैंने उन्हें वह महिमा दी है जो तूने मुझे दी है। यह एक उल्लेखनीय कथन है।

तुम कहते हो, ये अनाड़ी, आधे-अधूरे शिष्य हैं। पतरस, कौन यीशु को क्रूस पर जाने से रोकना चाहता है? इसलिए यीशु कहते हैं, शैतान, मेरे पीछे हट जा। यीशु ने अपनी महिमा उन्हें दे दी है।

यही तो वह कहता है। यानी, उनकी योग्यता पर विचार नहीं किया जाता। और जैसे कि इस्राएल एक जिद्दी और हठी लोग थे, वैसे ही शिष्य भी, एक तो वास्तव में गद्दार हैं, लेकिन शिष्य रुक-रुक कर, मुश्किल से विश्वास कर रहे हैं।

और जब पतरस पूछता है, तुम मुझे कौन कहते हो? यीशु कहते हैं, तुम मसीह हो, जीवित परमेश्वर के पुत्र हो। यीशु यह नहीं कहते, पतरस, तुम एक बुद्धिमान व्यक्ति हो। तुम आध्यात्मिक रूप से अपने साथियों से ऊपर हो।

नहीं, वह कहता है, मांस और लहू ने तुम्हें यह नहीं बताया। लेकिन मेरे पिता जो स्वर्ग में हैं, पतरस ने एक भविष्यद्वक्ता के रूप में बात की। पतरस ने उसके माध्यम से परमेश्वर का वचन उससे बेहतर तरीके से सुनाया जितना वह जानता था।

यूहन्ना 17:22-23. यीशु पिता से प्रार्थना करते हैं। हे पिता, जो महिमा तूने मुझे दी है, वह मैंने उन्हें दी है, ताकि वे भी वैसे ही एक हों जैसे हम एक हैं। वह परमेश्वर के लोगों के बारे में बात कर रहा है।

मैं उनमें हूँ और तुम मुझमें हो, ताकि वे पूरी तरह से एक हो जाएँ, ताकि दुनिया जान सके कि तुमने मुझे भेजा है और उनसे वैसा ही प्रेम किया है जैसा तुमने मुझसे किया है। मैं उनमें हूँ और तुम, पिता, मुझमें हो। पिता पुत्र में है, यहाँ तक कि देहधारी पुत्र में भी।

हम जो कहने जा रहे हैं वह यह है कि यह पारस्परिक निवास, यह पेरीचोरेसिस, यह... मैं कुछ अन्य शब्दावली भूल रहा हूँ। अगर मैं कोशिश नहीं करूँगा तो यह आ जाएगा। पेरी ग्रीक है, पेरीचोरेसिस।

लैटिन में इसका अर्थ होगा खतना। खतने या पेरीकोरेसिस के चारों ओर परिधि पवित्र त्रिदेव का एक शाश्वत कार्य है। व्यक्ति हमेशा एक दूसरे में रहते हैं।

व्यक्ति हमेशा एक दूसरे में रहते हैं। न केवल पिता यीशु में है, यूहन्ना 17:22-23, बल्कि यीशु यह भी सिखाता है कि वह पिता में है और वह और पिता एक दूसरे में हैं। मैं इसे फिर से कहूँगा।

जॉन ने आत्मा को छोड़ दिया है। सिस्टेमेटिक्स को कुछ ऐसा ही कहना है। जॉन ऐसा नहीं कहता, लेकिन आत्मा के बारे में जो कुछ भी वह सिखाता है, उसके आधार पर भी, यह कहना उसकी शिक्षा से उचित निष्कर्ष होगा कि पिता और पुत्र आत्मा में हैं, और आत्मा पुत्र में है, और आत्मा पिता में है, इस तरह।

यीशु कहते हैं कि वह और पिता एक दूसरे में हैं। यूहन्ना 14:10 और 11. क्या तुम विश्वास नहीं करते कि मैं पिता में हूँ, और पिता मुझ में है? जो शब्द मैं तुमसे कहता हूँ, वे मैं अपनी ओर से नहीं कहता।

पिता जो मुझमें रहता है, अपने काम करता है। मेरा विश्वास करो कि मैं पिता में हूँ, और पिता मुझमें है। अन्यथा, कामों के कारण ही विश्वास करो।

अगर यह सिद्धांत तुम्हारे लिए बहुत भारी है, तो भी मुझ पर विश्वास करो क्योंकि मेरे मुँह से चमत्कार और शब्द निकलते हैं। लेकिन सच्चाई यह है कि मैं पिता में हूँ। यह धरती पर बोलने वाला एक आदमी है।

ओह, लेकिन वह कभी भी एक साधारण मनुष्य नहीं है। अपने गर्भाधान के क्षण से ही वह ईश्वर-मनुष्य है। वह मैरी के गर्भ में ईश्वर-शिशु है।

यह एक अद्भुत बात है। उह, मैं पिता में हूँ, और पिता मुझमें है। जैसा कि हमने पढ़ा, वास्तव में, हमने पहले जो छंद पढ़े थे, उससे पहले हमने यूहन्ना 17:20 और 21 नहीं पढ़ा था, मैं न केवल इन, मेरे 11 शिष्यों के लिए प्रार्थना करता हूँ, बल्कि उन लोगों के लिए भी जो उनके वचन के माध्यम से मुझ पर विश्वास करते हैं।

वे सब एक हो जाएँ जैसे आप, पिता, मुझमें हैं, और मैं आप में हूँ। वे भी हम में एक हो जाएँ ताकि दुनिया उस बात पर विश्वास कर सके जो आपने मुझे भेजी है। यहाँ एक परिणाम है, और वह यह है कि विश्वासी इस पारस्परिक निवास में फँसे हुए हैं।

यह इस बात का बहुत अधिक अनुसरण करने का तरीका नहीं है। यह पवित्र आत्मा और मसीह के साथ एकता का पाठ्यक्रम है, जो biblicalelearning.org पर भी उपलब्ध है। लेकिन मैं बस इतना ही कहूंगा कि यीशु यहाँ पिता और खुद के आपसी निवास की तुलना विश्वासियों और हमारे आपसी निवास से करते हैं।

विश्वासी और पिता और पुत्र। यह, उह, अविश्वसनीय है। जाहिर है, समानताएँ हैं।

एक अर्थ है। हम समझ सकते हैं कि त्रिदेव हमारे अंदर निवास करते हैं। यही हमारे अंदर निवास करने का सिद्धांत है।

हम खास तौर पर पवित्र आत्मा के बारे में सोचते हैं। लेकिन अगर हम बाइबल में कही गई सभी बातों पर गौर करें, तो दो बार ऐसा कहा गया है कि पिता हमारे अंदर वास करते हैं, करीब आधा

दर्जन बार ऐसा कहा गया है कि यीशु हमारे अंदर वास करते हैं, करीब आठ बार ऐसा कहा गया है कि पवित्र आत्मा हमारे अंदर वास करते हैं। ये सभी व्यक्ति अविभाज्य हैं।

त्रित्व विश्वासियों में निवास करता है। मुश्किल हिस्सा यह है कि हम किस अर्थ में ईश्वर में निवास करते हैं? खैर, यह निश्चित रूप से एक प्राणी के अर्थ में है, और ईश्वर स्वयं में निवास करता है। त्रित्ववादी व्यक्ति एक दूसरे में निवास करते हैं, लेकिन स्वभाव से, ईश्वर वही है।

हम अनुग्रह के द्वारा त्रित्ववादी व्यक्तियों में निवास करते हैं। इसलिए, यह हमें न केवल परमेश्वर के प्रेम में भाग लेने के बारे में बताता है, बल्कि हम परमेश्वर के जीवन में भी भाग लेते हैं। आप देखिए, हमने अनंत जीवन का अर्थ कम करके आंका है।

किसी भी मामले में, दिव्य व्यक्तियों का आपसी निवास अद्वितीय है। हम दिव्य नहीं बनते, बल्कि दिव्य त्रिमूर्ति हमारे साथ अपना प्रेम और अपना जीवन साझा करते हैं। पिता, पुत्र और आत्मा एक दूसरे में रहते हैं, या दूसरे शब्दों में कहें तो वे एक दूसरे में हैं।

शास्त्र दोनों ही कहते हैं। वे परस्पर एक दूसरे में विद्यमान हैं। वैसे, मैंने एक व्यवस्थित कदम उठाया है, मैं यह कहने की कोशिश करता हूँ।

यूहन्ना ने ऐसा कभी नहीं कहा, लेकिन हम निश्चित रूप से कहेंगे, क्या पिता और पुत्र केवल एक दूसरे में निवास करते हैं और आत्मा में निवास नहीं करते? यह बेतुका है। क्या आत्मा ईश्वरीय जीवन का हिस्सा नहीं है? यह भी बेतुका है। इसलिए, यूहन्ना ऐसा नहीं कहता।

हम जॉन के स्पष्ट कथन से आगे बढ़ रहे हैं। फिर भी, सावधानी से, सावधानी से, व्याख्यात्मक रूप से, हम यह निष्कर्ष निकालते हैं। पिता, पुत्र और आत्मा एक दूसरे में रहते हैं।

वे एक दूसरे में हैं। वे परस्पर एक दूसरे में विद्यमान हैं। आप समझे? ईश्वर त्रिदेव हैं।

ईश्वर वही है। वह अकेला नहीं है। जब मैं कहता हूँ कि हमारे साथी एकेश्वरवादी, यानी यहूदी और मुसलमान, सही ढंग से सिखाते हैं कि ईश्वर एक है, तो मैं किसी को नीची नज़र से नहीं देखता या किसी को नीचा नहीं दिखाता।

लेकिन त्रिएकत्व के सिद्धांत को नकारते हुए, उन्होंने मान लिया है कि परमेश्वर हमेशा से अकेला था। परमेश्वर हमेशा से अकेला नहीं रहा है। परमेश्वर ने आदम और हव्वा को ज़रूरत की भावना से नहीं बनाया, बल्कि अपनी भलाई, अपनी उदारता से बनाया।

सृष्टि से पहले अनंत काल से ही, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा एक दूसरे से प्रेम करते थे, एक दूसरे से संवाद करते थे, एक दूसरे के साथ संगति करते थे, और दिव्य जीवन और आनंद साझा करते थे। परमेश्वर अकेला नहीं है। परमेश्वर एक में तीन है।

तीनों व्यक्ति दिव्य जीवन को साझा करते हैं। इसलिए त्रिदेवों में से प्रत्येक व्यक्ति, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा, पवित्र परमेश्वर है। इसीलिए यीशु कहते हैं, उसे देखने का मतलब है अदृश्य पिता को देखना।

पिता में हूँ, और पिता मुझमें है। जब तुम मुझे देखते हो, तो तुम परमेश्वर की सारी चीज़ें देखते हो। यही बात दूसरे लोगों के लिए भी कही जा सकती है क्योंकि परमेश्वर एक है, और वे परस्पर एक दूसरे में रहते हैं।

यह तथ्य कि ईश्वर हमेशा तीन व्यक्तियों में विद्यमान रहता है, एक रहस्य है जो मानवीय समझ से परे है। दिव्य व्यक्तियों का परस्पर निवास पवित्र त्रिमूर्ति का रहस्य है। धर्मशास्त्री इसे पेरिचोरेसिस, ग्रीक, खतना, या सह-अस्तित्व कहते हैं, जो दोनों लैटिन से हैं।

पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा ईश्वरीय सार में और एक दूसरे में सह-अस्तित्व में हैं। वे परस्पर एक दूसरे में निवास करते हैं। क्या मैं पूरी तरह से समझता हूँ कि मुझे अभी क्या सिखाया गया है? मैं नहीं समझता।

सच तो यह है कि मैं कोई बहुत अच्छा धर्मशास्त्री नहीं हूँ। मैं ऐतिहासिक धर्मशास्त्र में प्रशिक्षित एक साधारण व्याख्यात्मक धर्मशास्त्री हूँ जो दर्शनशास्त्र के बारे में इतना जागरूक होने की कोशिश करता है कि यह देख सके कि दार्शनिक धारणाएँ व्यवस्थित धर्मशास्त्र को कहाँ प्रभावित करती हैं। लेकिन किसी इंसान ने यह नहीं बनाया।

भगवान ऐसे ही हैं। भगवान हमेशा से ऐसे ही रहे हैं और रहेंगे। जैसा कि हम इस सत्र को समाप्त करते हैं, अगला सत्र पवित्र त्रिमूर्ति पर हमारा आखिरी सत्र होगा, जिसमें हम कहेंगे कि पिता, पुत्र और आत्मा एकता और समानता में मौजूद हैं।

और फिर हम मामले को निष्कर्ष पर ले जाएंगे।

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन और ईश्वर या ईश्वर के बारे में उनकी शिक्षा है। यह सत्र 9 है, त्रिदेवों का समापन।